नगर का विकास

यह बताना अत्यंत दुरुह कार्य है कि किस युग विशेष में नगरों की स्थापना हुई। समाज में विभिन्न चीजें जो हमें आज दिखायी पड़ रही हैं उसकी पृष्ठभूमि में विकास का एक लम्बा इतिहास समाहित है। लाखों वर्षों के विकास-क्रम में यह समाज, देश, गाँव, नगर, महानगर बने हैं। मनुष्य की आवश्यकताओं ने उत्पादन के साधनों की खोज की है। प्रत्येक युग में उसकी कुशलता, क्षमता, बुद्धि का विकास हुआ है। क्योंकि यह कहा जाता है कि **"मनुष्य औजारों को बनाने वाला पशु हैं"** (Man is tool making animal) मानवीय साधनों के विकास के साथ नगर का विकास भी जुड़ा है। समय की धूल ने नगर के विकास के इतिहास को भी ढक दिया है। इतिहास के पन्नों में जो अवशेष मिलते हैं वे नगर के विकास के युग को नहीं बताते। खण्डहर और पाण्डुलिपियाँ किसी देश की विकसित सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक हो सकते हैं। इनसे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक देश हजारों वर्ष पूर्व भी सम्पन्न और विकसित था किन्तु इतिहास के अवशेषों और टूटे चिन्हों से यह कैसे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गाँव बनने का युग और काल कौन-सा है और नगर कब और कैसे स्थापित हुए। नगर के विकास के साथ मानव समाज की क्षमता, योग्यता और परिपक्व बुद्धि का इतिहास जहाँ जुड़ा है वहीं उत्पादन के विकसित मानवीय साधनों का इतिहास भी समाहित है। अनेक समाजशास्त्रियों और इतिहासवेत्ताओं ने नगर की उत्पत्ति पर शोधपूर्ण कार्य किये हैं। ये विभिन्न तथ्यों के माध्यम से नगरों की उत्पत्ति के काल को स्थापित करना चाहते हैं।

नगर की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के विचार
(Views of Scholars on Origin of Cities)

(1) इस सम्बन्ध में **मागरिट मूरे** का नाम उल्लेखनीय है। **आपका विचार है कि नगरों का विकास धातु-युग में हुआ है** । इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए यह तर्क दिया कि धातु से बने अस्त्र-शस्त्र पत्थरों से निहित अस्त्रों से कहीं सुदृढ़ और अच्छे होते हैं। इसलिए धातु के अस्त्र वाले समूह पत्थर के अस्त्र वाले समूहों पर शासन करते थे। अस्त्र-शस्त्रों के विकास से सैन्यशक्ति में वृद्धि हुई। इस शक्ति से इन्होंने गाँवों और किसानों पर विजय प्राप्त की। ये विजयी समूह पहाड़ों और ऊँचे स्थानों पर किले बना कर रहते थे। अपनी सुरक्षा के लिए यह अपने पास सैन्य शक्ति भी रखते थे। **ये अन्ततः सैन्य-शिविरों में परिणत हो गए । ये सैन्य शिविरों के केन्द्र कालान्तर में नगरों में परिवर्तित हो गए । भारत के चित्तौड़गढ़ और तारागढ़ इसके उदाहरण हैं ।**

(2) **क्वोनी और थामस के विचार** मूरे से भिन्न है । आपका यह मत है कि सर्वप्रथम गाँवों

Scanned with CamScanner

की स्थापना हुई और गाँव ही धीरे-धीरे नगरों में परिवर्तित हो गए । अन्त में यह नगर ही विशाल साम्राज्यों की राजधानियाँ बनी। उन्हीं के शब्दों में, "निस्सन्देह वे पहले नवपाषाणकालिक गाँव के रूप में प्रारम्भ हुए जो एक या भिन्न प्रकार से दीवारदार नगरों में विकसित हुए, जिनमें से कुछ विशाल साम्राज्यों की राजधानियाँ बनी ।"

(No doubt they started as neolithic village which developed in one way or another into walled cities, some of which become the capitals of Great Empires)

(3) एच० जी० क्रील ने लिखा–"प्रारम्भ में नगरों के विकास में प्रशासनिक योद्धाओं ने अपने निवास स्थान अलग बनाये जो धीरे-धीरे नगरों के रूप में विकसित हो गए ।" यह भी कहा जा सकता है कि योद्धाओं के समूह किसानों के समूहों से ही बने होंगे। इसलिए इनके पास भी धातु के अस्त्र-शस्त्र होंगे। यह भी हो सकता है कि यह योद्धा बाहर के हों और विजय के पश्चात् वे भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर बस गये हों। जहाँ वे बसे हों वे स्थान कालान्तर में नगर बन गए हों।

(4) एण्डर्सन ने विकास में परिवर्तन के तथ्य को एक महत्त्वपूर्ण कारक माना है। नये आविष्कार और परिवर्तन नगर को स्थापित करने में सहायक रहे हैं। वे स्थान जो विकसित हो जाते थे वे अविकसित स्थानों पर अधिकार जमा लेते थे। जैसे नगरों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित करने की प्रक्रिया में प्रतिस्पर्धा से नगरों को स्थापित होने में सहायता मिली हैं।

(5) ममफोर्ड के अनुसार नगरों की उत्पत्ति गाँवों से हुई है। बड़े-बड़े विशाल गाँव ही कालान्तर में नगरों में परिवर्तित हो गए हैं। उसने लिखा है "नगर वास्तव में गाँव में दृश्य रूप में उपस्थित था, किन्तु गाँव एक अप्रजनक्य अण्डे की तरह था न कि विकसित गर्भस्थ तत्व की भाँति, क्योंकि उसे भावी विभिन्नतापूर्ण और जटिल साँस्कृतिक विकास की प्रक्रिया के लिए परिपूरक पुरुष संरक्षक के सूत्रों की परिपूर्णता की आवश्यकता थी ।"[1]

(6) टर्नर का विचार है कि ग्रीक और मिस्त्र की सभ्यता सबसे प्राचीन है। नगरों का विकास सर्वप्रथम यहीं हुआ है। आप यह मान कर चलते हैं कि नगर की उत्पत्ति और विकास युद्ध के परिणामस्वरूप ही हुए हैं। योद्धा ही नगर के संस्थापक थे। इन्होंने संगठित होकर किलों का निर्माण किया और गाँवों पर आधिपत्य जमाया।

(7) चार्ल्स कूले ने नगर की उत्पत्ति को परिवहन के साधनों से जोड़ा है। उसका विचार है कि नगरों की उत्पत्ति यातायात और सन्देशवाहन के साधनों के जन्म और विकास के साथ ही हुई है। जो स्थान यातायात और सन्देशवाहन की सुविधाओं से परिपूर्ण थे वही नगरों की स्थापनाएँ हुईं। उदाहरण के लिए समुद्र के किनारे नगरों का विकास है जो आज भी देखे जा सकते हैं–बम्बई और कलकत्ता दो महानगर इसके उदाहरण हैं।

Scanned with CamScanner

पर सही नहीं है। गाँवों में भी गैर-कृषि व्यवसायों के दर्शन हो सकते हैं।

अतः हम देखते हैं कि नगर की परिभाषा करना एवं गाँव तथा नगर में अन्तर करना बड़ा कठिन कार्य है। बर्गेल ने तो यहाँ तक कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि नगर क्या है, परन्तु किसी ने भी इसकी संतोषजनक परिभाषा नहीं दी है। नगर को अपने-अपने दृष्टिकोण एवं आधारों पर परिभाषित करने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है। नगर की अवधारणा की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं -

कानूनी दृष्टिकोण

बर्गेल ने लिखा है कि "किसी स्थान को जिसे एक घोषणा-पत्र (चार्टर) द्वारा जो एक उच्च अधिकारी द्वारा स्वीकृत किया गया है, कानूनी रूप से नगर परिभाषित किया गया है।" यह परिभाषा कानूनी रूप से तो स्पष्ट है परन्तु इसमें समाशास्त्रीय संदर्भ बिल्कुल नहीं है। कई बार प्रशासनिक कारणों से किसी स्थान को नगर का दर्जा नहीं मिलता जबकि वहाँ पर नगरीय जीवन की सभी विशेषताएँ मौजूद होती हैं।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण

एक स्थान विशेष पर रहने वाले व्यक्तियों के संबंध में आँकड़े एकत्रित कर उनके आधार पर भी परिभाषाएँ की गई हैं। इन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

(अ) जनसंख्या के आधार पर

यू.एस. ब्यूरो ऑफ सेंसस ने उन सभी रिहायशी स्थानों को नगर कहा जहाँ 2500 से अधिक व्यक्ति रहते हैं। यह सांख्यिकीय आधार है तथा इसका भी समाजशास्त्रीय संदर्भ बिल्कुल नहीं है। जनसंख्या का निर्धारण मनमर्जी से किया जाता है। पहले यह जनसंख्या 8000 थी, बाद में इसे 4000 किया गया तथा अन्ततः यह 2500 रही।

फ्रांस तथा अन्तर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय ब्यूरों ने 1846 में इसे 2000 रखा। मिश्र ने इसे 11000 माना। भारत में 1961 की जनगणना में 5,000 से अधिक जनसंख्या वाले स्थानों को नगरीय स्थान माना गया।

(ब) घनत्व के आधार पर

यह निर्धारित करना तो मुश्किल होता है कि जनसंख्या घनत्व का कौनसा स्तर गाँव को नगर में बदल देता है परन्तु 1926 में वाल्टर, एफ. विलकान्स ने कम से कम 1,000 व्यक्ति प्रति वर्गमील की आबादी वाले स्थानों को नगर माना है। इससे पूर्व 1909 में नेफरसन ने 10,000 जनसंख्या प्रतिवर्ग मील वाले स्थानों को नगर कहा था।

भारत की 1961 की जनगणना में नगर की परिभाषा के सहायक तंत्र के रूप में 1000 व्यक्ति प्रतिवर्ग मील माना गया था।

Scanned with CamScanner

भारत में नगरों की परिभाषा एवं श्रेणियाँ तय करने में उपर्युक्त तीनों बातें- कानूनी आधार, जनसंख्या का आकार एवं जनसंख्या का घनत्व, की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

व्यावसायिक दृष्टिकोण

विलकॉक्स ने गैर सांख्यिकीय तत्त्व, व्यवसाय के आधार पर नगर को परिभाषित करते हुए लिखा है, "जहाँ मुख्य व्यवसाय कृषि है उसे गाँव तथा जहाँ कृषि व्यवसाय नहीं है, उसे नगर कहेंगे।" बर्गेल भी विलकॉक्स के कथन से सहमत हैं।

अपरिचित संबंधी दृष्टिकोण

नगर वह स्थान है जो अपने आकार में इतना विस्तृत होता है कि जहाँ व्यक्ति एक-दूसरे से परिचित न हों, सोम्बर्ट ने इसे समाजशास्त्रीय परिभाषा कहा है। परन्तु यह परिभाषा भी उपयुक्त नहीं है। बड़े महानगरों में यह संभव है कि व्यक्ति एक दूसरे को न पहचानें पर छोटे नगरों में ऐसा नहीं होता।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

मम्फोर्ड ने नगर की समाजशास्त्रीय परिभाषा करते हुए लिखा है, "नगर स्पष्ट अर्थों में एक भौगोलिक ढांचा है। एक आर्थिक संगठन एवं एक संस्थात्मक प्रक्रिया तथा सामाजिक प्रक्रियाओं का मंच है और सामूहिक एकता का एक सौंदर्यात्मक प्रतीक है।"

मन्फोर्ड ने नगर के भौतिक ढांचे को अधिक महत्त्व दिया है, जिसे सफलता का प्रतीक भी माना है।

बर्गेल ने नगर को परिभाषित करते हुए कहा है, "कोई भी ऐसी बसावट जहाँ अधिकांश निवासी कृषि के अतिरिक्त गतिविधियों में लगे हों।" बर्गेल ने नगर की यह नकारात्मक परिभाषा दी है, जिसमें गैर कृषि गतिविधियों को नगर की महत्त्वपूर्ण विशेषता माना है। बर्गेल ने स्वयं ही आगे लिखा है कि मेरी परिभाषा की आगे और व्याख्या की जानी चाहिये। उन्होंने स्वयं माना कि ऐसा नहीं है कि नगरों में कृषि कार्यों पर प्रतिबंध होता है। नगर के आस-पास नगरीय लोग कृषि करते हैं तथा अपने घरों में सब्जियाँ उगाते हैं।

विश्व के कुछ भागों में "दस्तकारी गाँव" एवं "मछली पालन गाँव" भी हैं जो न तो नगरीय है तथा न ही ग्रामीण हैं। इसीलिये बर्गेल ने नगरों के लिये एक और तत्त्व "बाजार" को महत्त्वपूर्ण माना है।

लुई वर्थ ने नगर के बारे में लिखा है "सामाजिक रूप से विषमता लिये हुए व्यक्तियों की स्थाई बसावट, जो अपेक्षाकृत वृहत एवं सघन है, को नगर कहेंगे।"

लुई वर्थ ने नगर के तीन तत्त्वों पर जोर दिया है। ये हैं - सघनता, बड़ा आकार एवं विषमता।

सोरोकिन एवं जिंमरमैन ने नगर की परिभाषा देने की जगह 8 आधार बताये हैं जिनके आधार पर हम गाँवों को नगरों से अलग कर सकते हैं। इनका विस्तृत वर्णन इसी अध्याय में आगे किया गया है।

Scanned with CamScanner

नगर की विशेषताएँ

''ह्यूमन सोसायटी'' नामक पुस्तक में के.डेविस ने नगरीय सामाजिक संरचना के तत्त्वों की विस्तार से विवेचना की है। डेविस ने संरचना में निम्न तत्त्वों या विशेषताओं को रखा है-

1. सामाजिक विजातीयता

प्रथमत: जनसंख्या के एक छोटे स्थान पर संकेन्द्रित होने से विजातीयता में वृद्धि होने लगती है। जब जनसंख्या का एक स्थान पर संकेन्द्रण होता है तो प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिये श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण आरम्भ होता है जो सामाजिक विजातीयता को उत्पन्न करता है। द्वितीय, प्रतियोगिता से जन्मदर में कमी आती है और यह नगरीय अप्रवास को बढ़ाता है। तृतीय नगर, प्रजातीय, व्यक्तिगत, सांस्कृतिक भिन्नताओं को सहज रूप से स्वीकार करता है। चतुर्थ, अधिक मात्रा में होने वाली अन्त:क्रियाएँ विषमताओं को उत्पन्न करती हैं।

2. द्वितीयक साहचर्य

क्षेत्र के विस्तृत हो जाने के कारण अब प्राथमिक समूह कम हो जाते हैं और द्वितीयक समूहों की प्रधानता हो जाती है। अनेक व्यक्तियों से अन्त: क्रियाएँ होती हैं, समय का अभाव होता है। शीघ्र निर्णय लेना, आदि वे कारक हैं जो द्वितीयक सम्बन्धों को जन्म देते हैं। वर्थ का मानना है कि नगर के लोगों में परिचित व्यक्तियों से संबंद्धता एकपक्षीय होती है। नगरवासियों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेक व्यक्तियों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस कारण वे व्यक्ति के एक पक्ष से ही परिचित हो पाते हैं।

3. सामाजिक सहिष्णुता

डेविस के अनुसार सम्बन्धों का अवैयक्तिक होना तथा औपचारिक होना सामाजिक सहिष्णुता को जन्म देता है। व्यक्ति शारीरिक समीपता के होते हुए भी (भीड़ में), मतों, हितों, निर्धनता, सम्पत्ति, शिक्षा आदि में चरम सीमा तक भिन्न होते हैं तथा इस भिन्नता के प्रति उदासीन होते हैं।

4. द्वितीयक नियंत्रण

नगरीय क्षेत्र में व्यक्ति के लिये दो प्रकार के सामाजिक क्षेत्र उपलब्ध होते हैं। प्रथम प्राथमिक समूह जहाँ नैतिक नियंत्रण प्रभावी रहता है। द्वितीय, द्वितीयक समूह जहाँ अनौपचारिक नियंत्रण के साधन होते हैं। एक व्यक्ति जब चाहे तब प्राथमिक क्षेत्र से निकलकर महानगरीय भीड़ में खो सकता है और परम्परागत नियंत्रण के साधनों से मुक्त हो सकता है।

नगरों में भीड़ में खोकर व्यक्ति नियंत्रण के परम्परागत साधनों से बच सकता है। अत: यहाँ पर नियंत्रण के द्वितीयक साधनों अर्थात् औपचारिक साधनों का विकास करना पड़ता है जैसे पुलिस, कानून आदि।

Scanned with CamScanner

5. सामाजिक गतिशीलता

नगर भौगोलिक गतिशीलता को ही नही बढ़ाते बल्कि सामाजिक गतिशीलता के भी अवसर प्रदान करते हैं। श्रम-विभाजन, प्रतिस्पर्धा, अवैयक्तिकता, अर्जित परिस्थितियों पर बल देते हैं। नगर में व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठभूमि गौण हो जाती है। उसका कौशल, कार्यकुशलता, आजीविका की प्रकृति आदि के आधार पर उसकी पहचान का निर्धारण होने लगता है।

नगरीय व्यक्ति अपने जीवन-काल में अपने पद को उच्च या निम्न कर सकता है। इसका यह अर्थ भी नहीं है कि नगरों में असमानता कम हो जाती है, बल्कि असमानता में वृद्धि ही होती है।

इन समाजों में प्रदत्त के स्थान पर अर्जित परिस्थिति का अधिक महत्त्व होता है। स्तरीकरण में जातीय तत्त्व कमजोर पड़ जाते हैं।

6. ऐच्छिक साहचर्य

नगर का बड़ा आँकार, विभिन्नता, संपर्क के सकल अवसर ऐच्छिक साहचर्य के लिये पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। समान हितों वाले व्यक्ति लिंग, आयु, व्यवसाय, रुचि, रंग, धर्म, राष्ट्रीयता की भिन्नताओं के बावजूद मिल सकते हैं तथा अपना संगठन बना सकते हैं। इन संगठनों की आवाज को अधिक सुना जाता है।

7. वैयक्तिक पहचान

नगर व्यक्ति के व्यक्तित्व का दमन नहीं करता बल्कि उसे बल प्रदान करता है। द्वितीयक प्रकार के सम्बन्ध एवं समूह, अवसरों की बहुलता, सामाजिक गतिशीलता आदि सभी कारक व्यक्ति के स्वयं निर्णय तथा नियोजन करने पर बल देते हैं। ये सभी व्यक्ति को अलग पहचान देते हैं।

8. स्थानीय पृथक्करण

स्थानीय पृथक्करण को नगर की बसावट के प्रतिमानों में देखा जा सकता है। महत्त्वपूर्ण व्यवसाय नगर के केन्द्रीय भाग में स्थित होते हैं, जैसे वित्त संबंधी कार्य, आभूषणों के प्रतिष्ठान, रंगमंच, बड़े होटल आदि। इस क्षेत्र की भूमि की कीमत बहुत होती है। यही बात व्यावसायिक सेवाओं के बारे में भी सही है। औषधालय, कानूनी कार्यालय भी समीप ही स्थित होते हैं।

आवास के क्षेत्र भी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के प्रतीक बन जाते हैं। उदाहरण के लिये जयपुर में सी-स्कीम का रिहायशी इलाका उच्च वर्ग का माना जाता है तो एम.आई. रोड़ व्यावासायिक प्रतिष्ठानों के लिये महत्त्व रखती है। इसी प्रकार झालाना क्षेत्र सरकारी कार्यालयों के लिये प्रसिद्ध है।

Scanned with CamScanner